विज्ञान प्रकाश वर्ष : 23, अंक 1, जनवरी–मार्च 2025 ISSN : 1549-523-X

पण्डित मोतीलाल शर्मा द्वारा राजस्थान वैदिकतत्त्वशोध संस्थान से प्रकाशित ग्रंथ से उद्धृत

भारतीय दृष्टि से विज्ञान शब्द का समन्वय

'विज्ञान' शब्द में मुख्यतः दो पद हैं, 'वि'- 'ज्ञान'। 'वि' एक सुप्रसिद्ध उपसर्ग है, जिसका प्रायः तीन अर्थों में प्रयोग होता है – 1. विशेष 2. विविध 3. विरुद्ध ।जैसे कि 'वि' उपसर्ग से समन्वित 'विकर्म' शब्द की निर्मिति होती है जिसके शास्त्रों में तीन अर्थ प्राप्त होते हैं - विशेषकर्म-विविधकर्म-विरुद्धकर्म । इस दृष्टि से विज्ञान शब्द के भी तीन अर्थ हो सकते हैं - (1) विशेष ज्ञान-विज्ञान । (2) विविध ज्ञान-विज्ञान । (3) विरुद्ध ज्ञान-विज्ञान ।

प्रस्तुत विज्ञानशब्दार्थ के प्रसङ्ग में सबके अंत में प्रतिपादित तीसरा विरुद्धभावात्मक विज्ञानभाव का तो स्वतः ही निराकरण हो रहा है, क्योंकि प्रकृति के विरुद्ध ज्ञानात्मक विज्ञान अज्ञान से ढका हुआ ज्ञानस्वरूप मोह है, जिसे अविद्यात्मक 'अज्ञान' ही कहा गया है, एवं जिसके सम्बन्ध में-'**अज्ञानेनावृतं ज्ञानं तेन मुह्यन्ति जन्तवः**' यह प्रसिद्ध है। इसके अतिरिक्त शेष दो अर्थ विशेष ज्ञान और विविध ज्ञान का विश्लेषण भी यहाँ अपेक्षित है । लोक में सामान्यभाव (बहुतों में एक जैसा) से एकता का बोध होता है, और विशेषभाव (सभी में भिन्न-भिन्न) से अनेकता का बोध होता है। भिन्न भिन्न भावों से, भिन्न भिन्न भावों वाली विशेषताओं से, एवं उनसे उत्पन्न भेदभावों से सर्वथा ऊपर सामान्य ज्ञान तो एक ऐसा निरपेक्ष ज्ञान है, जिसका प्राकृतिक विश्व में कोई भी उपयोग नहीं है। यहाँ प्रसङ्ग है, विशेषभावात्मक विश्वानुबन्धी प्राकृतिक विज्ञानभावों का अर्थात् विशेष भाव से युक्त विश्व से सम्बद्ध विज्ञान का । विशेषभाव से अनेक की स्थिति बनती है। इसलिए विशेषता तथा विविधता-दोनों अन्त में समान अर्थों के रूप में ही जाने जाते हैं। इस आधार पर 'विशेषज्ञान स्वरूप विज्ञान' का 'विविधज्ञान स्वरूप विज्ञान' में ही पर्यवसान हो जाता है। जबकि विशेप और विविध-दोनों शब्दों में भी विज्ञान की दृष्टि से अत्यन्त सूक्ष्म भेद है। **'विशेषभावानुगतं-विशेषभावाभिन्नं-विविधं ज्ञानमेव विज्ञानम्'** अर्थात् वस्तु के विशेष भाव के अनुसार विशेषभाव से अभिन्न(संयुक्त) विविध प्रकार का ज्ञान ही विज्ञान है, यही लक्षण बनता है विज्ञानशब्द का । **'विविधं ज्ञानं विज्ञानम्'** इस लक्षण में विज्ञान शब्द में ज्ञान की सापेक्षता प्रतीत हो रही है। यही सापेक्षता शब्दों के पारस्परिक सम्बन्ध का वह सहज आकर्षण है, जिसके आधार पर विज्ञान का सुप्रसिद्ध सिद्धांत 'सापेक्षतावाद' प्रतिष्ठित हुआ है, जिसके पुनः प्रचार का श्रेय स्वनामधन्य स्वर्गीय आईन्स्टीन महाभाग को प्राप्त हुआ है। एक को दूसरे से भिन्न या पृथक्-बना देने वाला, 'भेदक' नाम से प्रसिद्ध 'विशेषभाव' जिससे अभिन्न है, ऐसा विविध भावात्मक ज्ञान जहाँ 'विज्ञान' कहलाया है, वहाँ इस विविध-रूपा भेदकता से पृथक् एक प्रकार का ज्ञान ही 'ज्ञान' माना जायगा। इस प्रकार कहा जा सकता है कि- सभी की **एकत्वस्वरूप प्रतीति – ज्ञान है एवं विविध ज्ञान – विज्ञान है।** इस सन्दर्भ में कठोपनिषद् (1/4/11) के एक मन्त्र की ओर हमारा ध्यान आकर्षित हो जाता है- **यदेवेह तदमुत्र, यदमुत्र तदन्विह । मृत्योः स मृत्युमाप्नोति य इह नानेव पश्यति ।।** श्रुति ने जहाँ जहाँ नानाभावों का, अनेकभावों का, पृथग्भावों का स्वरूपविश्लेषण किया है, वहाँ वहाँ उनके साथ साथ 'मृत्यु' शब्द का भी सम्बन्ध समन्वित माना है। अतएव इस श्रौती दृष्टि से यह प्रमाणित है कि, नानात्त्व- अथवा भेदात्मक दृष्टि अथवा –पृथकता की स्थिति -जहाँ मृत्यु का स्वरूपधर्म है, वहाँ एकत्त्व-अथवा अभेदात्मक दृष्टि अथवा -अपृथक्त्व की स्थिति -अमृत का ही स्वरूपधर्म है। यह परमात्म तत्त्व है, जो कि अपने स्वरूप से निरपेक्षस्थिति-भावापन्न (उसे किसी अन्य की अपेक्षा नहीं है) है, परिणामस्वरूप वह अपरिवर्तनीय है, नित्यकूटस्थ है, शाश्वत है, अविचाली है, सनातन है, ध्रुव है, व्यापक है, असीम है, मायातीत है, विश्वातीत है, वही निरपेक्ष 'एकत्त्व' से समन्वित रह सकता है, एवं उसे ही हम 'अमृत' कहा करते हैं, और सम्भवतः अमृत से युक्त उसी एकत्त्वभाव वाले तत्त्वविशेष का नाम निरपेक्ष 'ज्ञान' है।

अतःमृत्यु का नाम ही विज्ञान है, एवं अमृत का नाम ही ज्ञान है । मृत्युभावात्मक विज्ञान नानाभावापन्न है, एवं अमृत-भावात्मक ज्ञान एकत्त्वानुबन्धी है। जो एकत्त्वनिबन्धन ज्ञान की उपासना करते हैं, वे अमृतपक्ष का अनुगमन कर रहे हैं। एवं जो नानात्त्वनिबन्धन विज्ञान में प्रवृत्त हैं, वे मानो मृत्युपथ का ही आह्वान कर रहे हैं। और यही भारतीय विज्ञान शब्द का, एवं तत्सापेक्ष ज्ञानशब्द का एक प्रकार का समन्वय माना जा सकता है, माना जाता रहा है।